Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
July-December 2023 4(2), 1122–1125

बाल्मीकि रामायण में स्त्री चित्रण की ऐतिहासिकता का एक अध्ययन

Lekhraj Singh [1], Shagufta Parveen [2]

[1] Researcher, Department of History, Mangalayatan University, Aligarh
[2] Research Director, Department of History, Mangalayatan University, Aligarh

DOI
10.29121/shodhkosh.v4.i2.2023.2229

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2023 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

OPEN ACCESS

ABSTRACT

स्त्री हमेशा ही मानव जीवन का केन्द्र बिन्दु रही है। पत्नी रूप से रमण, सुख देने वाली, माता रूप से वात्सल्य प्रदर्शित करने वाली, भगिनी रूप से सुख एवं शान्ति प्रदान करने वाली, पुत्री रूप से वात्सल्य की अनुभूति कराने वाली दासी रूप में सेवा शुश्रूषा करने वाली, स्त्री की विविधता किस को स्वीकार न होगी। बाल्मीकि रामायण के सन्दर्भ में स्त्री चित्रण की विविधता का अध्ययन मानवीय स्वभाव को ध्यान में रखते हुए उनके तीन गुणों के आधार पर उनके चार भाग किये गये है। जो स्त्रियों में अनाशक्ति रखने के लिए इस तरह के तथ्य उपस्थित करते थे। वास्तव में बाल्मीकि ने तो हमें दो सिद्ध तपस्विनियों के दर्शन भी कराये है, जिनका अध्यात्मिक उत्कर्ष किसी दृष्टि से पुरुष से न्यून नहीं था।

Keywords: बाल्मीकि रामायण में सती और असती दोनों प्रकार की स्त्रियों के चरित्र का उप स्थापना कर सती नारियों का चरित्र

प्रस्तावना

यह तापसियां रावती और स्वयंप्रभा थी। बाल्मीकि स्त्री की उदारता, त्याग, दृढता, शुचिता, तेजश्विता आदि गुणों से विशेष रूप से प्रभावित रहा है।[1] यही कारण है कि इनके महाकाव्य से प्रसूत तीन स्त्रियाँ[1] (अहिल्या, तारा, मन्दोदरी) की गणना प्रायः स्मरणीया पंच महाकन्याओं में की है। इन पंच महाकान्याओं में कुन्ती और द्रोपदी का महाभारत से सम्बन्ध है, स्त्री के गरिमामय व्यक्तित्व से प्रभावित होकर भी महर्षि ने कहा है।[2]

"काव्यं रामायण कृत्स्नं सीतायाश्चरितंमहत्"

इस महाकाव्य में कई स्थलों पर स्त्रियों की आलोचना भी की गई है, परन्तु कवि इस सम्बन्ध में सदैव सचेष्ट रहता है, कैकेयी द्वारा छले गये,महाराज उसे धिक्कारते हुए कहते है–

धिगस्तु पोषतोनाम राठाः स्वार्थपरायणाः

इस उक्ति के पश्चात् कवि तत्क्षण सतर्क हो जाता है। पूरी नारी को कलंकित करना उसे अभिप्रेत नहीं। दशरथ के कथन में संशोधन करवाते हुए कवि कहता है।

नब्रवीमि स्त्रियः सर्वाभरतस्यैव मातरम्।

नारी के कतिपय दोषों की कवि ने एक समालोचक की दृष्टि से आलोचना भी की है। इन दोनों में औत्सुक्य हठ, अहंकार, कटुता, ईष्या चपलता आदि प्रमुख है। भावुकता जन्य दुर्बलताओं की ओर भी कवि ने हमारा ध्यान आकृष्ट किया है कि स्त्रियाँ लुभावनी बातों से प्रलुब्ध की जा सकती है, इसलिए बन्धु बान्धवों को उनकी निरन्तर देखभाल करनी चाहिए।महर्षि ने असतो स्त्रियों के चरित्र की निन्दा भी की है।[3] सती और असती दोनों प्रकार की स्त्रियों के चरित्र का उपस्थापना कर सती नारियों के चरित्र को अनुकरणीय बताया है जिन दुर्गुणों का वाल्मीकि में उल्लेख किया है, उसके मूल में यही भावना रही होगी कि एक सदनारी अपने चरित्र में उन दुर्गुणों का समावेश नही होने दें, साथ ही वह अपने सद्गुणों का विकास पर प्रतिष्ठा को प्राप्त करें। इसी क्रमशः मारीच, हनुमान् और श्रीराम ने अभिव्यक्त किया है तीन स्थलों पर एक ही वाक्य की पुनरावृत्ति इस तथ्य की ओर कवि के अत्यधिक आग्रह की ही द्योतित करती है।[4] एक अन्य प्रसंग में भी कवि ने अपनी मान्यता का प्रकाशन किया है कि स्त्रियाँ अपने चरित्र बल से ही सुरक्षित रहती है जैसे–

''दाराश्चरित्र रक्षित''

बाल्मीकि उदारवादी है। मनुष्य से अपराध होना कोई आश्चर्य की बात नहीं है। कर्त्तव्यच्युतता मानवीय दुर्बलता है। गौतम पत्नी अहिल्या अपने पत्नी धर्म से स्खलित होती हैं। इन्द्र को गौतम के द्वेष में पहचानते हुए भी दिव्य रति के लोभ में अपने कर्त्तव्य से च्युत हो जाती है और गौतम के प्रति अपराध कर बैठती हैं। तत्कालीन रूप से वह शाप भी प्राप्त करती है।[5] कवि उसे इस शाप से मुक्ति के लिए तप का मार्ग दिखलाया है शाप के प्रक्षालन की शक्ति तप में ही है। प्रायश्चित व्यक्ति को पावन बना देता है। बाल्मीकि ने भी अपनी अहिल्या को प्रायश्चित की अग्नि में जलाकर तपः शक्ति से शुद्धकर पुनः पत्नी के आसन पर प्रतिष्ठित किया है, यह महर्षि की संकीर्णता रहित दृष्टि का ही परिणाम है।[6]

बाल्मीकि ने जहाँ पत्नी से पातिव्रत्य के अनुपालन की अपेक्षा की है, वहीं उसके भरण पोषण एवं रक्षा का दायित्व पति के कन्धों पर डाला है। पति पत्नी के आपसी प्रेम को आवश्यक माना है, क्योंकि प्रेममय वातावरण में हीजन्म लेने वाले शिशु का सम्यक विकास सम्भव है। बाल्मीकि रामायण की सीता सर्वगुण सम्पन्न नारी है जिन्होनें चरित्रवान् दृढव्रती और शौर्य सम्पन्न पुत्रों का प्रसव किया जो आज भी अविस्मरणीय हैं माता को महाकवि ने इन्हीं कारणों से अत्याधिक आदर प्रदान किया है। पितृ प्रधान समाज में भी माता को पिता के तुल्य ही साम्माननीय बताना महर्षि की समदृष्टि का ही परिणाम है। कवि की दृष्टि में पर स्त्री संसर्ग से बड़ा कोई पाप नहीं है।[7] महर्षि परदारा को पराभव का कारण मानते है। अपनी नायिका के माध्यम से इसी तथ्य को उन्होनें अभिव्यक्त किया है ''तुम अपने को आदर्श बनाकर अपनी ही स्त्रियों में अनुरक्त रहो।'' जो अपनी स्त्रियों से संतुष्ट नहीं रहता तथा जिसकी बुद्धि धिक्कार देने योग्य है, उस चपल इन्द्रियों वाले पुरुष को पराई स्त्रियां पराभव को पहुंचा देती हैं वाल्मीकि कवि स्त्री को सदैव रक्षणीय मानते हैं तथा अपेक्षा करते है जैसे अपनी स्त्री की रक्षा की जाती है, उसी प्रकार पराई स्त्रियों की भी रक्षा कीजिए।[8]

एक स्थल पर जटायु के माध्यम से कवि कहते है जैसे पराए पुरुषों के स्पर्श से अपनी स्त्री की रक्षा की जाती है, उसी प्रकार दूसरों की स्त्रियों की भी रक्षा करनी चाहिए। बाल्मीकि स्त्रियों से शुद्ध चरित्र की अपेक्षा करते है, पति की एक मात्र गति भी बतलाते है। पतिव्रता के प्रभाव की स्पष्ट उद्घोषणा करते हैं। कवि ने तीन पात्रों के मुख से इस तथ्य का उद्घाटन करवाया है।[9]

''रक्षितां स्वेन तेजसा

बाल्मीकि स्त्री चरित्र की उदारता और दृढ़तापूर्वक चरित्र स्खलन पर प्रतिबन्ध दोनों ही अभिप्रेत है। वस्तुतः यही कारण है कि उन्होंने पुरस्कार और दण्ड का विधान किया हैं एक ओर अपने अखण्ड पतिव्रत के प्रभाव से अनुसूया को अनेकशः आध्यात्मिक एवं चमत्कारिक शाक्तियों पुरस्कार रूप प्राप्त हुई है वही अहिल्या को अपने चारित्रिक स्खलन के कारण अदृश्य हो जाने का दण्ड भी मिला है। अपने चरित्र के चल पर अनन्य निष्ठा और भक्ति भावना से युक्त शबरी को जहाँ उसके आराध्य का दर्शन होता है। वही अपनी चरित्रहीनता के कारण ही शुर्पणखा को विकृत होने का दण्ड भी प्राप्त होता है। अपने सम्पूर्ण महाकाव्य में बाल्मीकि ने स्त्रियों के चरित्र निर्माण और उसके विकास को महत्वपूर्ण स्थान दिया है। वस्तुत यह स्त्रियां ही महाकाव्य के कथानक को गति प्रदान करती है, उसका परम विकास करती हैं। प्राचीन विद्वान न नारीचित्रण की सजीवता देखकर इसे नारी प्रधान रचना माना है।[10] बाल्मीकि कवि ने दाम्पत्य प्रेम' को ही सर्वोत्कृष्ट माना है इस प्रेम की उदात्तता और प्रगाढ़ता को प्रकट करने के लिए उन्होनें राम और सीता के प्रेम को अपने महाकाव्य का विषय बनाया है, उनकी नायिका स्वीकार्य है विवाह पश्चात् प्रेम ही कवि का अभिप्रेत है। बाल्मीकि ने 'दाम्पत्य प्रेम में काम के योग को स्वीकार किया है, परन्तु इसमें इन्होंने मध्यम मार्ग के अनुसरण की अनुशंसा की है। 'अतिप्रणय और अप्रणय दोनों को ही अनुचित माना है स्त्रियों के लिए तो काम वृत्त को कवि ने सर्वथा अशोभनीय माना है।' कवि सदैव स्वाध्याय रहने का आग्रह करते है। परस्त्री को विष मिश्रित भोजन के समान अग्राहय माना है। नायक नायिका को इतना महत्त्व नहीं मिला है, यह महर्षि की दृष्टि के सन्तुलन का ही परिणाम है कि उनकी नायिका नायक से किसी प्रकार न्यून नही होकर समतुल्य ही रही है। भौतिक भोगों के प्रति वैराग्य बुद्धि रखने तथा तप को ही जीवन का आधार मानने वाले उदारमना

ऋषियों, महर्षियों अथवा साधुजनों के लिए कोई अधिक प्रीतिकार नहीं था। कोई अल्प प्रीतिकार भी नहीं होता। इनका दृष्टि सभी के लिए समान होती है। जो विवाद ग्रस्त है अथवा न्याय से वंचित कर दिये गये है। उनके प्रति साधुजनों की सहज सहानुभूति होती है। क्रौच बध के प्रसगं में क्राँची के प्रति महाकवि की सहज सहानुभूति दर्शनीय है। रामायण के कथाकार स्त्री को समाज की एक धुरी मानते है। स्त्री पुरुष दोनों रथ चक्र की भाँति होते है जिन्हें समानान्तर रखे विना गृहस्थ जीवन का सम्यक् संचालन सम्भव नहीं है। इस तथ्य से कवि परिचित है। इसीलिए उन्होनें अपने महाकाव्य में स्त्री और पुरुष दोनों को समान महत्त्व दिया है। स्त्रियों के व्यक्तित्व में विकास का समुचित अवसर प्रदान किया है। बाल्मीकि कवि नही है न केवल यथार्थ चित्रकार ही है, बल्कि वहएक उपयुक्त समाज सुधारक और स्वस्थ समाज के निर्माता भी हैं। रामायण में यत्र–तत्र सर्वत्र कवि की सामाजिक कुरीतियों के प्रति नकारात्मक अभिव्यक्ति देखी जा सकती है, चाहे वह अहिल्या के चरित्र प्रक्षालन का प्रसङग हो अथवा निम्न जातीय शबरी के प्रेम पूर्ण आतिथ्य का अवसर हो, कवि ने सर्वत्र अपने नायक के माध्यम से समाज सुधार की छवि ही उपस्थित की है। इन आधारों पर प्रयाग से आग्नेय दिशा में 18 मील की दूरी पर उन्होंने गंगा और तमसा के संगम पर उनका आश्रम निर्धारित किया है। डा० एन० एल० डे० ने कानपुर से 14 मील दूर विठुर में बाल्मीकि आश्रम को स्वीकार किया है। कुछ विद्वान अमृतसर के पास रामतीर्थ नाम स्थान पर महर्षि वाल्मीकि का आश्रम मानते है। अन्य विद्वान भारत नेपाल सीमा पर स्थित बाल्मीकि नगर में इसकी स्थिति स्वीकार करतें है, जो भौगोलिक विवरणों के आधार पर तर्कसंगत प्रतीत नहीं होती है। बाल काण्ड तथा उत्तर काण्ड के विवरण इस सम्बन्ध में परस्पर भिन्न है। बालकाण्ड में उनका आश्रम तमसा के किनारे स्थित माना जाता है, जहाँ से गंगा दूर बताई गयी इस तमसा तट को तीर्थ कहा गया है जिससे यह स्पष्ट नही होता है कि पवित्र स्थल होने के कारण ऐसा कहा गया है, अथवा अन्य कारणों से परन्तु उत्तर काण्ड में गंगा के किनारे ऋषि आश्रमों के बीच बाल्मीकि के आश्रम का वर्णन मिलता है। अतः बाल्मीकि के दो आश्रम प्रतीत होते है, जिनमें से पहले आश्रम में बाल्मीकि रामायण की रचना हुई थी तथा दूसरे में निर्वासित सीता रहती थीं। वही लव–कुश का जन्म हुआ था। बाल काण्ड के अनुसार पहला आश्रम उत्तर प्रदेश के बलिया जनपद में हो सकता है। जो तमसा के तट पर बसा है। पद्म पुराण में भी कहा गया है कि गंगा के किनारे उत्तर तट पर दर–दर क्षेत्र में आधुनिक बलिया जनपद बाल्मीकि रहते थे। आज भी वहाँ बालेश्वर घाट पर पुराने बाल्मीकि मन्दिर की परम्परा मे एक मन्दिर स्थित है।[11]

निष्कर्ष

जहाँ पर बाल्मीकि ने रामायण की रचना की होगी, वह आश्रम बलिया जनपद में ही रहा होगा। बाल्मीकि ने रामायण की रचना करते समय स्त्रियों के प्रति अपना उदार दृष्टिकोण रखा था। बाल्मीकि रामायण अभिधान ही इसका द्योतक है। रामायण शब्द का विग्रह दो प्रकार से किया जा सकता है। राम+अयन – राम का अयन और रामा का अयना अर्थात् राम और रामा का समन्वित अयन ही रामायण है। वाक्यज्ञ महर्षि ने एक ही शब्द रामायण से राम और सीता के अपनी रचना के समान महत्त्व देने का प्रयास किया है। इस प्रकार बाल्मीकि के कई आश्रमों का होना संशयात्मक नहीं है वह क्योंकि ऋषि प्रायः घूमते रहते थे। वह जहाँ जाते थे, अपने लिए आश्रम बना लेते थे जैसे बाल्मीकि रामायण में वर्णित विश्वामित्र पहले सिद्धाश्रम में रहते थे, जो बाद में हिमालय पर चले गये डा० मिराशी ने चित्रकूट के आश्रम को प्रक्षिप्त माना हैं, क्योंकि बडौदा आरियण्टल इन्स्टयूट में रामायण के प्रामाणिक संस्करण में इसे प्रक्षिप्त माना गया है।डा० पी० एल० वैद्य के अनुसार भी यह तर्क संगत नहीं है। डा० मराशी ने बालकाण्ड तथा उत्तरकाण्ड के विवरणों को मिलाकर इनके आश्रम के निर्धारण के लिए चार आधार बनाये है।

CONFLICT OF INTERESTS

None

ACKNOWLEDGMENTS

None

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

बाल्मीकि आश्रम डॉ0 निधी, पृ० (सम्मेलन पत्रिका भाग 53 सं0 34 शकू1889)
ज्योग्राफिकल डिक्शनरी ऐन्सिएक्ट एण्ड मेडिबल इण्डिया, डा0 एन0एल0 डे0) पृ0 273
धर्म गुग सोमेश चौधरी, पृ0 20
बाल्मीकि नगर, कैलाशपति निषाद, पृ0 2
वा0 रा0 1.2.3
वा0 राा0 3.38.30

वा0 रा0 3.4.20
वा0 रा0 1.2.4
वा0 रा0 2.40.23
वा0 रा0 4.6.6
ऋ0 वेद 1.26.4, 4.57.6–7 आदि।